

रहती हूँ, मैंने इनको देखा है। देखा है तो क्या देखा है? मैंने भी दादियों को कई वर्षों से देखा है। यदि मैं किसकी भी कमी देखती हूँ, चाहे 30 साल वाला या दो साल वाला या 10 दिन वाला, कमी देखने की आदत है तो रूहानियत, सच्चाई, प्रेम मेरे पास होगा ही नहीं। मुझे सच्चाई, रूहानियत, प्रेम से संपन्न और संपूर्ण बनना है। और सब भी संपन्न बन जाएँ, यही मेरी भावना हो। इसके अलावा और कुछ सोचना, देखना उससे पाप कटेंगे नहीं पर पाप बनेंगे। पुराने पाप याद से कटेंगे। हम 74 साल से इकट्ठे हैं पर किसी की भी कमी मेरे को पता ही नहीं है। न पता रखने की ज़रूरत है। पता रखने से और ही पाप बन जाते हैं। भूल दूसरे की, देखूँ मैं, वह मेरे में आ जायेगी। फिर मेरे व्यवहार में न रूहानियत रहेगी, न प्रेम, न सच्चाई।

प्रश्न:- जो बात जैसी है, वैसी दिखाई तो पड़ती है, इस अनुसार झूठी बात, झूठी तो दिखाई देगी ही, फिर क्या करें?

उत्तर:- क्यों दिखाई देगी? ये आँखें किसलिए हैं, ब्रह्मा बाबा की आँखें किसलिए हैं? मैंने शरीर दिया बाबा को, तो आँखें किसलिए हैं? जब आप योग में बैठते हो तो सबको कैसे देखते हो, उस समय देखेंगे क्या कि यह ऐसा है, यह वैसा है। नहीं देखेंगे

ना। फिर कहते हैं, उस समय तो वह अच्छे से बैठे हैं, तो अच्छे ही दिखेंगे। जब आप अपने को अच्छा देखेंगे तो अन्य भी आपको अच्छे दिखाई देंगे। सन् 1981 में दीदी हमारे पास लंदन आई थी। मुझे बीमारी के कारण ब्रश करना भी मुश्किल था। फिर भी चेहरे पर खुशी थी। अंदर चिन्तन था, मैं आत्मा बाबा की हूँ, लगता नहीं था, कैसे करूँ, सब हो जाता था। बाबा की मदद मिल जाती थी। जब बाबा दृष्टि देता है, उस घड़ी हमारी सबकी स्थिति कितनी अच्छी होती है। मैं भी सबको बाबा जैसी दृष्टि से देखूँ – ये सब बाबा के बच्चे हैं, समर्पित हैं, ब्राह्मण हैं। मेरे को एक-एक के लिए रिस्पेक्ट हो। चमड़ी को देखने की खराब आदत है। जब तक आत्मा को देखने की आदत नहीं है, तो समझो आत्म-दृष्टि नहीं बनी है। चलते-फिरते, खाते-पीते उसका चेहरा और नाम-रूप याद आयेगा। फिर सोचो, मेरा योग कैसा है? योग क्या करती हूँ? उससे मेरा क्या कल्याण है? क्या वो घड़ी मेरी सफल है? बाबा कहता, समझ के आधार से वैराग चाहिए। यह मेरे काम की बात नहीं, मुझे नहीं देखनी है। जरूरत ही नहीं है, फुर्सत ही नहीं है।

प्रश्न:- किमी के साथ संबंध ठीक नहीं, उसका कारण और परिणाम

क्या है?

उत्तर:- अगर किसी के साथ संबंध ठीक नहीं तो समझ की कमी है। उसका योग पाई भी नहीं लग सकता। जिसका एक के साथ भी थोड़ा शत्रुता भाव है, वो आत्मा अपनी शत्रु है, वो भगवान को अपना मित्र बना नहीं सकती है। किसी के साथ शत्रुता हो, भले मुख में ना हो, मन में हो, दिल में उसका दर्द हो, उसका नाम सुनते ही घबराहट हो जाये, उसका मुँह देखने से घबराहट हो जाए, ऐसा कोई महान योगी हो तो हाथ उठाए। कोई नहीं है ना।

प्रश्न:- किसी से शत्रुता ना भी हो पर व्यवहार काम चलाऊ हो, क्या तब भी योग नहीं लगता?

उत्तर:- यह भी क्या है? मैं आपसे काम चलाऊ होऊँगी तो बाबा भी मेरे साथ काम चलाऊ होगा। मुझे डर लगता है, मैं जैसा इसके साथ करूँगी, बाबा भी मेरे साथ ऐसा ही करेगा। बाबा का जितना मेरे प्रति प्यार है, जितना मुझे दे रहा है, मैं अंदर से सोचूँ, इनको भी इतना ही मिले तो बाबा गुप्त मेरे से प्यार करेगा कि बच्ची का दिल तो साफ है ना। दया दृष्टि तो इसमें है ना। दया के बिना लव कैसे हो सकता है? दया का अंश नहीं है तो अपनी उन्नति के लिए अपने पर भी दया नहीं करते। अपने प्रति भी बड़े कठोर हैं। ❖